संपादक : डॉ. अमित जैन

अंक : 3

जैन प्रकाश

मूल्य : ₹ 10
भाषा : हिन्दी
वर्ष : 70
पृष्ठ : 8
माह : मार्च

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U (C)

Date of Publication : 14-03-2026
Date of Posting : 21/22-03-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

Address Here

राष्ट्रीय अध्यक्ष : अतुल जैन, दिल्ली | राष्ट्रीय महामंत्री : डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत | राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : विनय कुमार जैन, पानीपत

आचार्य आनंदऋषि स्मृति दिवस पर विशेष...

सम्पादकीय

धर्मदीप की ज्योति और संघ चेतना के प्रेरणास्रोत : आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म. का स्मरण

- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : amitraijain78@gmail.com

जैन धर्म की गौरवशाली परंपरा उन महान संतों से आलोकित है जिन्होंने अपने चिंतन, आचरण और मार्गदर्शन से समाज को दिशा प्रदान की। राष्ट्रसंत श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् आचार्य श्री आनन्दऋषि जी महाराज ऐसे ही युगदृष्टा संतों में थे। 28 मार्च 1992 को उनका देवलोक महाप्रयाण हुआ, किन्तु उनके विचार और संघनिष्ठ दृष्टि आज भी समाज के लिए प्रेरणा का प्रकाशपुंज बने हुए हैं।

पूज्य आचार्यश्री धर्म को केवल उपदेश का विषय नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक मानते थे। उनके अनुसार-"धर्म जीवन के लिए मार्गदर्शक दीपक के समान है। धर्मदीप की सहायता से ही मानव अपने वास्तविक कर्तव्य पर अग्रसर हो सकता है। जिस प्रकार दीपक स्वयं प्रकाशित होता है और अन्य वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार विवेकवान व्यक्ति धर्म का अनुयायी बनकर अपनी आत्मा को उज्ज्वल बनाता है तथा दूसरों के लिए भी पथप्रदर्शक बन जाता है। जब तक मनुष्य के अंतःकरण में धर्म की ज्योति नहीं जलती, तब तक उसका समस्त आचार-विचार और क्रिया-कलाप निरर्थक सिद्ध होते हैं तथा वह आत्ममुक्ति के मार्ग पर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाता-ठीक उसी प्रकार जैसे घानी चलाने वाला बैल दिनभर चलकर भी वहीं का वहीं रह जाता है।"

यह संदेश हमें बताता है कि धर्म का वास्तविक स्वरूप बाहरी आडंबर में नहीं, बल्कि विवेक, सदाचार और कर्तव्यनिष्ठ जीवन में निहित है। पूज्य आचार्यश्री ने सदैव संघ-संगठन की भावना को भी प्रबल किया और समाज को एकता, अनुशासन तथा समन्वय के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

आज जब हम उनके पुण्य स्मृति दिवस के पावन अवसर के निकट पहुँच रहे हैं, तब यह केवल श्रद्धा व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि उनके विचारों को अपने जीवन में उतारने का भी प्रेरक क्षण है। पूज्य आचार्यश्री का संदेश आज भी उतना ही प्रासंगिक है, धर्म का प्रकाश जब जीवन में उतरता है, तभी व्यक्ति का आचरण सार्थक बनता है और समाज में सद्भाव, नैतिकता तथा आध्यात्मिकता का वातावरण निर्मित होता है।

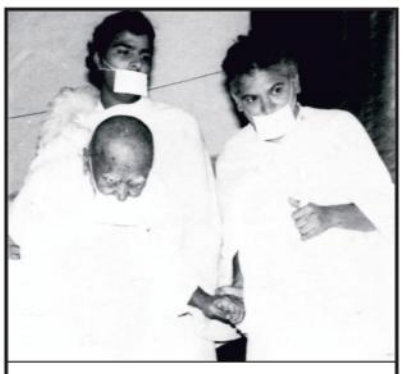

पूज्य आचार्य श्री आनंदऋषि जी महाराज और उनका हाथ पकड़े वर्तमान आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी महाराज, पार्श्व में आगामी संघ अनुशास्ता युवाचार्य श्री महेंद्रऋषि जी महाराज

इस पावन स्मृति दिवस पर देशभर के समस्त श्री संघों से विनम्र निवेदन है कि वे श्रद्धा, साधना और स्वाध्याय के साथ इस अवसर को मनाएँ। जप, तप, धर्मचर्चा, सामूहिक प्रार्थना और सेवा के कार्यक्रमों के माध्यम से हम आचार्यश्री के आदर्शों को स्मरण कर सकते हैं। यदि यह दिन समाज में धर्मचेतना, नैतिकता और संगठनात्मक एकता को सुदृढ़ करने का माध्यम बन सके, तो यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आइए, इस पुण्य स्मृति दिवस पर हम सभी यह संकल्प लें कि धर्मदीप की उस ज्योति को अपने जीवन में प्रज्वलित रखेंगे, जिसकी प्रेरणा हमें पूज्य आचार्यश्री के विचारों से प्राप्त हुई है। संघ की एकता, समाज की समरसता और धर्ममय जीवन की साधना ही उनके प्रति हमारी सच्ची कृतज्ञता और विनम्र श्रद्धांजलि होगी।

अध्यक्षीय

अपेक्षाओं में स्वयं भी खरे उतरें

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस
E-mail : ajvk1973@gmail.com

किसी भी जीवन में मैत्री का विशेष महत्व होता है। मित्र एक ऐसा प्राणी होता है जिसके समक्ष कोई व्यक्ति अपने मन के सभी पन्ने खोल देता है। मित्र से घनिष्टता व अभिन्नता का मापदण्ड यही है कि कोई व्यक्ति उससे कितना अधिक खुला हुआ है। कठिन स्थितियों में मित्र का साथ बड़ा संबल होता है। दुःख की स्थितियों में मित्र की सांत्वना विषाद को अत्यन्त न्यून कर देती है।

सच्चा मित्र इन तथ्यों को प्रमाणित करता है, परन्तु मित्र ही वह जीव भी होता है जो कभी छल करता है, घात करता है। अतः मित्र की परख करने में सजगता जरूरी है। कई मित्र स्वार्थी मित्र होते हैं। वे किसी विशेष प्रयोजन से ही किसी से मित्रता करते हैं और प्रयोजन की सिद्धि होते ही मुँह फेर लेते हैं। कुछ मित्र अपनी लतों की संगति बिठाने वाले मित्र होते हैं या उनमें मित्रता जैसा कुछ पलने लगता है। कुछ अनुबंध मित्र होते हैं। वे परस्पर एक हित संगठन या सोसायटी रूप में मिलते हैं, जुड़ते हैं और विलग होने पर उनकी मित्रता भी क्षीण होने लगती है। ऐसी ही जुड़न, धर्म, राजनीति, समाजसेवा आदि क्षेत्रों में भी होती है। कुछ क्लब मित्र होते हैं, वे केवल मनोरंजन के लिए ही जुड़ते हैं।

इस प्रकार मित्रता के कई आयाम हैं। पर मित्रता के नाम पर कपट करने वाले तथा अपना स्वार्थ सिद्ध करने वालों से तो वे प्रणाम मित्र अच्छे जो बिना किसी अपेक्षा से किसी के लिए आवश्यकता पड़ने पर प्रस्तुत हो जाते हैं और आवश्यकता नहीं होने पर अपने ही हाल में मस्त रहते हैं। मित्रता में घनिष्टता या अभिन्नता के स्तर तक वे ही पहुँचते हैं जो अपना स्वार्थ, अपनी जब तब की अपेक्षाओं को महत्व नहीं प्रदान करते। उनके ऐसे कोई कार्य हो भी तो वे सहज सिद्ध हो जाते हैं, कार्य की सिद्धि या असिद्धि मित्रता में बाधक नहीं होती।

अधिकांश मित्र अनायास ही जुड़ते हैं। पर अंतस के भेद देने के पहले यह सुनिश्चित कर लें कि कहीं आपके दिये भेद का वह दुरुपयोग तो नहीं करेगा या उल्टे आपमें हीनत्व तो पैदा नहीं करेगा। हो सकता है आपको कुछ समय उपरांत लगे कि आपका यह गठजोड़ आप पर ही भारी पड़ रहा है तो बोझ को ढ़ोते चले जाने की बनिस्पत उस क्षण से ही अपने को उससे विलग करते चले जाएं। ऐसी स्थिति में सामने वाले की ओर से खीझ या नये उकसावे आ सकते हैं पर उनसे विचलित न होवें, अपने निर्णय पर दृढ़ रहें।

जैसी अपेक्षा आप अपने मित्रों से रखते हैं और जैसी निष्ठा उनमें चाहते हैं, ठीक वैसी ही पूर्ति अपनी ओर से भी करें। आप भी उनकी अपेक्षाओं में खरे उतरें, आप भी निष्ठा से जुड़े रहें। गठजोड़ की यही शर्त होती है कि गाँठ का हर पहलू मजबूत हो।

28 मार्च को राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनंदऋषि जी महाराज के पुण्य स्मृति दिवस पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से शतशः नमन।

श्रमण भगवान महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर

भक्ति की डोर ... महावीर की ओर

मंगलवार
31 मार्च 2026
सायं 5 बजे से

एक ऐसी शाम... जहाँ हमारे स्वर और श्रद्धा सीधे उस 'त्रिशला नंदन' के चरणों में अर्पित होंगे...

विशेष प्रस्तुति : डॉ. अनामिका जैन "अम्बर"

स्थान : सांस्कृतिक हॉल जैन भवन, गोल मार्किट, नई दिल्ली

प्रायोजक : श्री अतुल जी जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस)
श्री विजय जी जैन (राष्ट्रीय चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस)

सूर्यास्त से पूर्व गौतम प्रसादी की व्यवस्था है।

आमंत्रक : जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

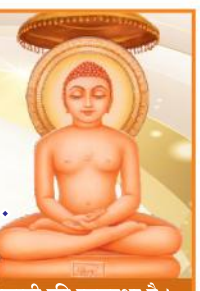

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये
प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा
बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.
Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली - मो. : 98110 75336

राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष
प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत : 98373 94448	श्री विनयकुमार जैन, पानीपत : 83968 00000	श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली : 98116 14567

राष्ट्रीय चेयरमैन	राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष
श्री विजय जैन, पानीपत : 98966 00022	श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई : 76665 40600	श्री जसवंत जैन, दिल्ली : 98104 35108

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
श्री महावीर रांका जैन, पोलुर 94442 04046
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी 98151 84811
श्री संजय जैन, दिल्ली 98111 67770
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर 78699 99222
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे 98230 82152

राष्ट्रीय समन्वय समिति
श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक) 98101 21450
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (ज़ोन - 1) 98842 21003
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (ज़ोन - 2) 98150 20661
श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा (ज़ोन - 3) 94141 13056
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर (ज़ोन - 4) 98237 99998
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (ज़ोन - 5) 98251 35744

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली 98681 25710

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573
श्री पुखराज मेहता जैन, बैंगलोर 98446 77725
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद 92463 61008
श्री दिनेश कुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888
श्री राजन जैन, लुधियाना 98140 77445
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला 94667 01008
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली 98106 72111
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली 98112 95715
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर 95117 05291
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर 77738 66000
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक 94222 46500
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहमदनगर 94222 22138
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 63100
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी 94205 85878
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे 98220 34344
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री
श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली 98102 78217

जीवन प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर 93434 83838
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बैंगलोर 98440 58123

मानव सेवा योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर 98270 31032
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष बाफना जैन, सूरत 93749 86671
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर 93021 27805

जीव दया योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 94224 59362
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल वड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई 98200 72121

ज्ञान प्रकाश योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 95400 02778
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली 98112 39872
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली 98117 48722
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली 98101 63165

वैय्यावच्च योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955

अल्पसंख्यक योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद 82862 00000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर 94214 18121

जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, औरंगाबाद 94207 64456

हर प्रांत जैन भवन योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे 94220 36831
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली 98110 12512
राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे 90110 17777

राष्ट्रीय जन कल्याण योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन 98110 70722
राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन 93108 99904
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन 98187 25000
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन 98110 39625
राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन 96549 73690

विहारधाम योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94229 44800
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद 98226 59910
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड़', मोहाली 93185 93599

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटाईजेशन योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़वाहा 98146 99393
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बैंगलोर 98445 46014
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली 93501 32274
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली 98101 93101
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना 98141 05020

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली 93191 87434
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन ' प्रथम', दिल्ली 97117 74004
राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन 94604 45060

राष्ट्रीय युवा शाखा
अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली 87662 14456
चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली 98711 98111
कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद 93767 37111
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत 93745 44138
महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद 91522 11555
कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली 99998 38345

राष्ट्रीय महिला शाखा
अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली 98687 04326
चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत 94278 08401
वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली 98187 44166
वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत 92515 74016
महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना 79737 96548
कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली 92504 18306

प्रांतीय अध्यक्ष
श्री प्रकाश बुरड़ जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1) 98456 71449
श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1) 98490 11350
श्री बी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1) 94444 31536
श्री अनिल जैन (पंजाब - ज़ोन 2) 98141 40491
डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - ज़ोन 2) 92541 19621
श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2) 97203 57112
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2) 98100 62967
श्री आनंद चपलोत जैन (राजस्थान - ज़ोन 3) 94609 66507
श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3) 96696 97797
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3) 98302 49151
श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4) 94222 50478
श्री नितिन बेदमुथा जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5) 93710 75787
श्री सम्पत खाविया जैन (गुजरात - ज़ोन 5) 98250 47321

राष्ट्रीय मंत्री
श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद 92461 58452
श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई 98402 00916
श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना 98155 66885
श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत 98960 92861
श्री नितिन जैन, बड़ौत 99993 99382
श्री नरेश जैन 'रिंढ़ाना', दिल्ली 98100 66701

श्री दिलीप रूणवाल जैन, दिल्ली 98112 05545
श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली 93100 54428
श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर 93222 56788
डॉ. सुधीर जैन, कोटा 94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इन्दौर 99818 50900
श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर 94250 62147
श्री मीठालाल कांकरिया जैन, औरंगाबाद 98226 71574
श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहमदनगर 94212 05000
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया 94231 93447
श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, औरंगाबाद 93726 66999
श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई 98212 87789
श्री विलास राठौड़ जैन, पुणे 98901 74007
श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत 94287 45537

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री
श्री दीपक जैन, दिल्ली 93508 70065
श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना 94172 53101
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे 93710 89896
श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू 94191 90527
श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर 94626 72015

राष्ट्रीय संगठन मंत्री
श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई 99412 45660
श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली 93122 40901
श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे 98224 07446
श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई 98200 83919
श्री त्रिलोक जैन, दिल्ली 98681 06607

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति
एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां 90504 00009
एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़ 98141 90422
एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत 90347 19097

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति
सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव 99237 11711
सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई 98339 57170
सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, वाघोली, पुणे 80876 35657
सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली 99996 10010
सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द 92554 30824

प्रांतीय महामंत्री
श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक) 99649 72251
श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना) 92473 99003
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु) 99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब) 98150 00791
श्री संजय जैन (हरियाणा) 98130 50937
श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश) 98371 09567
श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली) 98111 38968
श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान) 98280 50143
श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश) 94254 00121
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल) 93310 09391
श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र) 98220 79225
श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे) 99218 79613
श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात) 94279 30764

जैन कॉन्फ्रेंस विश्वस्त मण्डल
श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन 93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर 93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना 98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली 98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत 98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे 98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत 98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी 93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत 83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली 98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद 82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी 98505 67010

वरिष्ठ मार्गदर्शक	
श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367
श्री जसवंत दलाल जैन, बैंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021
श्री शांतिलाल पोखरणा, बैंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुज़फ्फरनगर (उत्तद प्रदेश)	98370 67082
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौत (उत्तर प्रदेश)	99974 55741
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 78626
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385
श्री महावीर कुमार बाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976
श्री गौतम संचेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पकंज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री यशवंत सिंह बाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री शोभाचंद संचेती जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहमदनगर (महाराष्ट्र)	
श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेश्वर (गुजरात)	99250 20407
श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री हीरालाल खाबिया जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

प्रभु महावीर के कल्याणकों से अध्यात्म की प्रेरणा लें

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

(गतांक से आगे)

मोह क्षय का संकल्प : राज वैभव में रहते हुए भी किसी पुद्गल को अपना नहीं मानते थे। उन्होंने किसी जीव में मोह नहीं किया, वे निश्चय में जानते थे कि प्रत्येक जीव अकेला है उदय कर्म के अधीन में यहाँ शरीर धारण कर कर्म क्षय करने आया हूँ। अतः उन्होंने परिवार में किसी को अपना माना ही नहीं। न किसी सम्बन्ध में आसक्त हुए। जब तक दीक्षा कल्याणक नहीं हुआ, वे घर में अलिप्त रहे, व्यक्ति, वस्तु, स्थान से परे अपने अस्तित्व में रहे। क्योंकि ये जानते थे कि 'मैं शरीर नहीं हूँ, मैं तो आत्मा हूँ। आत्मा अजर, अमर अविनाशी है। आत्मा अकेली है। आत्मा का कोई नहीं है, सारे संयोग इस देह से जुड़े हैं। सारे संसारी देह से मोह करते थे।' वे देह को ही अपना नहीं मानते थे अतः गृहवास में अलिप्त रहे। न वे आर्त-रौद्र ध्यान करते थे न किसी की स्तुति करते थे। ये शरीर व आत्मा का भेद कर आत्मा के ध्यान में लीन रहते थे। छद्मस्थ होने के कारण शुक्ल ध्यान की धारा किंचित टूटती रहती थी। किन्तु पुनः - पुनः आत्मा की ओर अभिमुख होकर बिना किसी कारण वे परम आनन्द में लीन रहते थे।

प्रेरणा : हम सभी को प्रभु महावीर के गृहवास से प्रेरणा लेनी चाहिए कि अगर घर में उदय कर्म के अधीन रहना पड़े तो कैसे निर्लेप रहना चाहिए, कैसे अलिप्त रहना चाहिए। उन्होंने अपने श्वासों को व्यक्तित्व निर्माण में न लगाकर अस्तित्व में स्थित रहने में व्यतीत किया, तभी वे हमारे लिए आदर्श एवं पूज्य बने।

दीक्षा कल्याणक : प्रभु महावीर ने 30 वर्ष की उम्र में, उत्कृष्ट साधना के लिए गृहवास का त्याग कर दिया। उन्होंने देखा जहाँ अनुकूलता है वहाँ मोह का पोषण है। राज-परिवार में चाहकर भी वे प्रतिकूलता में नहीं रह पा रहे थे। आदीक्षा लेकर वे एकान्त एकत्व अनुकूलता है वहाँ मोह की साधना के लिए, मोह कर्म को क्षय करने के लिए संसार-त्यागकर चल दिए। दीक्षा अर्थात पाँचों इन्द्रिय द्वारों को बन्द करना। आग्रव के मुख्य पाँच कारण हैं-मन व बुद्धि को संबंधित कर कर्म आने के पाँचों मुख्य मिथ्यात्व अव्रत प्रभार, कषाय व अशुभ योग। संवर द्वारा नवीन कर्मों के बन्ध को रोकना। (शेष पृष्ठ 5 में)

श्रमण संघ अमृत महोत्सव पर चिंतन

- श्रमण संघीय प्रमुख्र मंत्री पू. श्री शिरीषमुनि जी म.सा.

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण करने जा रहा है। श्रमण संघ स्थापना का उद्देश्य था कि साधु संघ-समाज के छोटे दायरे से निकलकर 'वसुधैव कुटुम्बक' को आत्मसात् करते हुए क्षेत्र व सम्प्रदाय में ऊपर उठकर तीर्थंकरों द्वारा स्थापित श्रमण संघ के अनुसार, अपनी सारी ऊर्जा 'आय तुलं पयासु' में लगाए अर्थात् प्रत्येक जीव में आत्मा के दर्शन हो। हम स्वयं अपने अस्तित्व का बोध प्राप्त कर प्रत्येक जीव में अपने समान जीव के दर्शन करें। अभेद दृष्टि से अपने पराये के भाव से मुक्त हो जाएं तथा सब प्रकार के राग-द्वेष से मुक्त हो जाएं। साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका चारों तीर्थ अपने अस्तित्व का बोध प्राप्त कर व्यक्तित्व के मिथ्यात्व व मोह क्षय करने का पुरुषार्थ करें।

तीर्थ में कौनसा जीव प्रवेश कर सकता है? जिसे अपने स्वरूप का बोध हो गया हो अर्थात् जो अपने जीव को केन्द्र बिन्दु बनाकर जीव का कल्याण करना चाहता है उसे तीर्थ में स्थान मिलता है। उसे ही तीर्थ कहते हैं। तीर्थ में प्रवेश करने से पहले प्रत्येक साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका को सत्य का बोध व सत्य पर श्रद्धान आवश्यक है, इसलिए हमारा प्रथम पाठ है-

"अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणों गुरुणो,
जिण पणत्त तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहीयं ।"

अर्थात् प्रत्येक तीर्थवासी का लक्ष्य हो कि अरिहंत, सिद्ध मेरे देव हैं। उनके जैसा बनना ही मेरा लक्ष्य है। उनके मार्ग पर चलने के लिए मेरे जीवन में कोई सद्गुरु आए जो सुसाधु हो अर्थात् वह भगवान के मार्ग पर स्वयं गतिमान हो। सत्य का शोध करने वाला हो, जिसकी सत्य पर श्रद्धान हो, जो सत्य में जीने का पुरुषार्थ कर रहा है। ऐसा सद्गुरु मेरे जीवन में आए। आत्मसिद्धि शास्त्र में फरमाया है-

जे स्वरूप समझ्यां बिना, पाम्यो दुःख अनन्त?
समझाव्युं ते पद नमुं, श्री सद्गुरु भगवंत।

चक्रव्यूह में भ्रमण कर रहा हूँ। इस चक्र में पड़ने का मूल कारण ही यह है कि जीव को अपना बोध नहीं है, वह पर को अपना मानकर उसी को अपना सारा समय दे रहा है और अंत में जब शरीर छूटता है तब उसे बोध होता है, अहो जिस शरीर को मैंने सारा समय दिया, जिस शरीर व शरीर से जुड़े व्यक्ति, वस्तु, स्थान को अपना मानकर राग-द्वेष किया अर्थात् अपना व पराया माना वे सब यहीं छूट रहे हैं। ये तो मेरे थे ही नहीं। वे सब छूटते हैं पर वह छोड़ना नहीं चाहता। इसी बीच आयुष्य पूर्ण होता और कार्मण शरीर को साथ लेकर आगे बढ़ जाता है। जीव के अपने अज्ञान के कारण हर भव, हर गति में उसके साथ यही होता है और वह अनंत दुःख को पाकर अपने कार्मण शरीर को बढ़ाता जाता है।

जब जीव के अनंत पुण्य की कतारें लगती है, तब उसके जीवन में कोई सद्गुरु आते हैं। सद्गुरु उसे अपने स्वरूप का बोध करवाते हैं - हे जीव! तू कौन है, पहले यह जान। तू शरीर नहीं आत्मा है। सद्गुरु व्यक्ति को जड़ और जीव का भेद विज्ञान करवाते हैं। "जिण पण्णत्तं तत्तं" जिनेश्वर भगवान द्वारा प्ररूपित तत्व पर श्रद्धान् करवाते हैं। इसी बात को तत्त्वार्थ सूत्र में फरमाया है - "तत्त्वार्थ श्रद्धानां सम्यक् दर्शनम्" तत्त्व नौ हैं, जीव-अजीव पुण्य, पाप आस्रव, संवर, बंध, निर्जरा व मोक्ष। जीव आत्मा, अजीव शरीर व शहरी से जुड़े सभी पदार्थ। दोनों तत्वों का बोध प्राप्त कर, अस्तित्व पर आत्मा पर श्रद्धान करना ही सम्यक्त्व है। श्रद्धान है सम्यक् दर्शन।

जिसे आत्म बोध, स्वरूप बोध हो गया, ऐसा साधक तीर्थ का अंग होता है। ऐसे श्रमण संघ को प्रभु महावीर ने चतुर्विध संघ कहा है। हम सभी गौरवशाली हैं कि हम ऐसे तीर्थ का अंग हैं। इसके अंग होकर हम स्वयं तिरे तथा औरों को तारने के निमित्त बने।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की स्थापना सन् 1952 में हुई। इस संघ का उद्देश्य है -(1) सत्य पर श्रद्धान् कर सम्यक् दर्शन को परिपक्व बनाना (2) सत्य का ज्ञान अर्थात् भेद विज्ञान द्वारा जहाँ भेद की आवश्यकता है वहाँ भेद करें। अर्थात् शरीर व आत्मा का भेद करें। (3) अभेद दृष्टि तीर्थ के प्रत्येक सदस्य में अभेद दृष्टि से अपने समान आत्मा के दर्शन करें, जिससे छोटे-बड़े ऊँचे नीचे, अपने पराये के कारण होने वाले कर्म बन्धन रुके। (4) व्यवहार में हम भेद-विज्ञान के द्वारा-परस्परोपग्रहो जीवानाम् के सूत्र को आत्मसात् करते हुए जिनशासन, जिनवाणी को प्रमुखता देखें। (5) 'मित्ति में सव्व भूएसु' के सूत्र को आत्मसात् करें। सबका सम्मान, सबका विकास सबमें समान आत्मा के दर्शन करें। (6) निश्चय और व्यवहार धर्म को आत्मसात् करने वाला श्रमण संघ आज भी उसी उदार भावना से जिनशासन की सेवा में अपनी भूमिका निभा रहा है।

NAMOKAR METALS
S.K. Jain
Deals in: Ferrous Non Ferrous & All Kinds of Industrial Scrap

अंकुर जैन
राष्ट्रीय युवा चैयरमैन
जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
Plot No.-5, SarurPur Ind. Area.
Nangla gujran, Near Nagar chowk, Faridabad
E-mail : namokarmetals@gmail.com Mobile : 9811601241

434 आयंबिल तप की अनुमोदना

हम, श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से श्रमण संघीय जैन दिवाकरीय उपप्रवर्तिनी, आयंबिल तप आराधिका पूज्य श्री अरुणप्रभा जी म.सा. के 434 आयंबिल तप की सुखसाता पूछते हैं एवं उनके तप की खूब-खूब अनुमोदना करते हैं।

प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 10

प्रमाद और अहंकार का संबंध (गहन विस्तार)

यदि प्रमाद को एक वृक्ष माना जाए, तो उसका बीज अहंकार है। जब तक अहंकार सक्रिय है, प्रमाद की संभावना बनी रहेगी। और जब अहंकार देखा जाता है, प्रमाद स्वतः कमजोर होने लगता है। इस अध्याय में हम दोनों के गहरे संबंध को समझेंगे।

1. अहंकार क्या है?

अहंकार केवल घमंड नहीं है। अहंकार वह केंद्र है जो स्वयं को अलग मानता है। जो कहता है- "मैं।" "मेरा।" "मेरे कारण।", "मेरे बिना नहीं।" यह 'मैं' स्वाभाविक रूप से जन्म लेता है। पर जब यह कठोर हो जाता है, तो सजगता कम होने लगती है।

2. 'मैं' की संरचना अहंकार कई परतों से बना है-पहचान उपलब्धियाँ स्मृतियाँ मान्यता की इच्छा तुलना धीरे-धीरे व्यक्ति इन्हीं परतों को अपना वास्तविक स्वरूप मान लेता है। जब इन परतों को कोई चुनौती मिलती है, तो प्रतिक्रिया उठती है। यही प्रतिक्रिया प्रमाद है।

3. अहंकार और कर्ताभाव अहंकार स्वयं को कर्ता मानता है। "मैंने किया।", "मैं कर रहा हूँ।", "सब मेरे प्रयास से चल रहा है।" कर्ताभाव जितना गहरा होगा, तनाव उतना बढ़ेगा। क्योंकि जब 'मैं' केंद्र में है, तो हर परिणाम उससे जुड़ जाता है। यह जुड़ाव प्रमाद को जन्म देता है।

4. अहंकार और नियंत्रण अहंकार अनिश्चितता सहन नहीं कर पाता। उसे परिणाम चाहिए। उसे व्यवस्था चाहिए। उसे दूसरों का व्यवहार नियंत्रित चाहिए। जब नियंत्रण टूटता है, तो क्रोध, निराशा या भय उत्पन्न होता है। यह भाव सजगता को ढँक देते हैं। जहाँ नियंत्रण है, वहाँ प्रमाद छिपा है।

5. सूक्ष्म अहंकार अहंकार केवल सांसारिक उपलब्धियों में नहीं होता। वह आध्यात्मिक उपलब्धियों में भी प्रवेश कर सकता है। "मैं समझ गया।", "मैं जागरूक हूँ।", "मैं दूसरों से आगे हूँ।", यह सूक्ष्म अहंकार सबसे खतरनाक है। क्योंकि वह स्वयं को सजग मानता है। जब व्यक्ति स्वयं को जानने वाला घोषित कर देता है, तो देखने की प्रक्रिया रुक जाती है। यहीं से प्रमाद फिर लौट आता है।

6. अहंकार और भय अहंकार का मूल भय है-विलीन हो जाने का। उसे अस्तित्व में अलग रहना है। उसे पहचान बनाए रखनी है। जब कोई स्थिति उस पहचान को खतरे में डालती है, तो प्रतिक्रिया उठती है। यह प्रतिक्रिया प्रमाद है।

7. शरीर में अहंकार अहंकार केवल विचार नहीं है। वह शरीर में भी दिखता है। छाती का कसाव-कर्ताभाव का संकेत। नाभि का तनाव-असुरक्षा का संकेत। गर्दन की कठोरता-अहंकार की जिद का संकेत। जब सजगता आती है, तो ये कठोरताएँ ढीली पड़ने लगती हैं।

8. अहंकार को तोड़ना नहीं, देखना है अहंकार से लड़ना भी अहंकार है। यदि व्यक्ति कहे-"मुझे अहंकार नहीं रखना चाहिए," तो वह स्वयं को सुधारने की कोशिश कर रहा है। सजगता में सुधार नहीं होता, सिर्फ निरीक्षण होता है। जब 'मैं' की गतिविधि देखी जाती है, तो उसकी पकड़ ढीली पड़ती है।

9. साक्षी की भूमिका जब व्यक्ति स्वयं को विचारों, भावों और प्रतिक्रियाओं से अलग अनुभव करता है, तो साक्षी जन्म लेता है। साक्षी अहंकार से बड़ा है। वह देख सकता है-"अभी मैं स्वयं को सिद्ध करना चाहता हूँ।" "अभी मैं नियंत्रण करना चाहता हूँ।", "अभी मैं आहत हूँ।", यह देखना ही मुक्ति की शुरुआत है।

10. अंतिम स्पष्टता अहंकार प्रमाद की जड़ है। प्रमाद अहंकार की छाया है। जब अहंकार अचेतन है, तो प्रमाद सक्रिय है। जब अहंकार देखा जाता है, तो प्रमाद ढीला पड़ता है। और जब साक्षी स्थिर हो जाता है, तो प्रमोद प्रकट होने लगता है। अगले अध्याय में हम अहंकार की पहली प्रमुख अभिव्यक्ति-कर्ता भाव-को विस्तार से समझेंगे।

❀❀❀

(क्रमशः अगले अंक में)

आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. के स्मृति दिवस पर विशेष

औरों को शीतल करे...

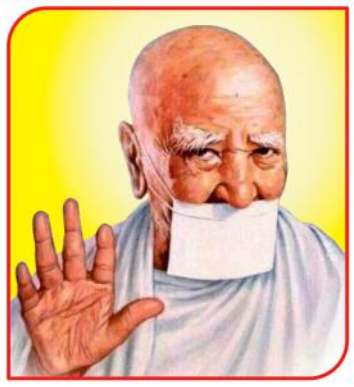

- युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म.सा.

जो लोग बदलाव के रूप में देश परदेश में विविध प्राकृतिक स्थानों पर भ्रमण कर के पुनः अपने स्थान पर लौटते हैं, वे प्रसन्नचिन होते हैं स्वयं को काफी तरोताजा महसूस करते हैं। काम की अत्यधिकता के कारण आई हुई थकान से स्वयं को मुक्त अनुभव करते हैं। अधिक उष्मा एवं शारीरिक श्रम से क्लात (थके हारे) किसान, मजदूर तनिक-सी देर के लिए पेड़ आदि की छांव में बैठकर अत्यंत राहत महसूस करते हैं। प्राकृतिक सौदर्य के स्थानों पर, हिल स्टेशन पर अथवा पेड़ आदि की छांव में अनुभव होने वाले आराम से भी बढ़कर अनेक गुणा शीतलता, तन-मन की स्वस्थता और आनंद जिनके समीप प्राप्त होता था वे थे 'गुरु आनंद।'

पूज्य गुरुवर आनंदऋषिवर के जीवन में शान्ति वात्सल्य, गंभीरता, सरलता, मधुरता, सौम्यता, करुणा, अनुकंपा आदि गुण इस तरह से समाये हुये थे जैसे दूध में मिठास, आसमान में नीलापन, इन्द्रधनुष में सप्तरंग। गुरुवर के जीवन में इन गुणों का अन्तर्भाव होने से उसकी सन्निधि, समीपता, निकटता पाने वाला व्यक्ति अपनी निजी पीड़ा, व्यथा, चिंताओं से सहजतया मुक्त हो जाता था। दुःख का मूल ही, उन चरणों की शरण पाकर समाप्त हो जाता था।

शान्ति यानी स्वयं के भीतर में रहे हुये आवेगों का शमन। दमन में जबर्दस्ती होती है, शमन में सहजता और साधना होती है। क्रोध-वासना आदि के आवेगों का शमन करना पूज्य गुरुदेव ने संयम के प्रारंभ में ही शुरू कर दिया था। पूज्य गुरुदेव श्री रत्नऋषि जी म.सा. का नारियलवत् व्यवहार (बाहर से कठोर, भीतर से मृदु-नरम) गुरुदेव के अन्तस्तल में शान्ति का सर्जन कर रहा था। यह शान्ति ऐसी थी कि अनेक सांधिक आदि विषमताओं में भी पूज्य गुरुदेव शांत स्थिर रहे तथा संघ आदि में भी उत्तेजनाओं को दूर करके वातावरण शांत एवं प्रसन्न बनाया।

घटना उस समय की है जब ई. सन् 1989 में आचार्य भगवंत अहमदनगर परीक्षा बोर्ड में विराजमान थे। पूना से समाज के अग्रणी गणमान्य चालीस-पचास लोगों का एक शिष्टमंडल पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ। उन लोगों के साथ में आये हुये एक निकटस्थ व्यक्ति ने यह जानकारी (बाद में) दी कि वे सभी लोग पूना से नगर तक के प्रवास में काफी संतप्त एवं उत्तेजित थे। अमूक संत एवं सती जी के तत्कालीन निर्णय एवं व्यवहार से लोगों में अत्यधिक रोष था। सभी लोग परस्पर बातचीत करते हुये अलग-अलग प्रतिक्रियाओं द्वारा अपना रोष अभिव्यक्त कर रहे थे। सभी आचार्य भगवंत के समक्ष अपना गुस्सा उंडेलना चाहते थे और कठोर निर्णय की सिफारिश लेकर आये थे।

पूज्य गुरुदेव के दर्शन देने के समय में जब कक्ष के द्वार खुले सभी गुरुदेव के समक्ष पहुँचे और वंदना की, दर्शन किये। पूज्य गुरुदेव ने सभी की ओर अमी-नजर फेरकर मधुर-मंद मुस्कान बिखेरी, सभी को दया पालो से सम्बोधित कर बैठने का संकेत किया। तत्पश्चात् गुरुदेव ने धीर-गंभीर स्वर में सभी से पूछा 'के बात है?' (क्या बात है?) गुरुदेव के मुख से ये तीन शब्द निकलते ही सभी का आवेश, रोष एकदम नौ दो ग्यारह हो गया। सभी की तरफ से एक व्यक्ति ने बिल्कुल थोड़े शब्दों में और शांत स्वर में अपनी बात रख दी और चुप हो गये। आवेश उत्तेजना का जो तूफान समाज के वातावरण को अधिक कलुषित-दूषित कर सकता था, वह तूफान उस पुण्यपुंज महापुरुष के सम्मुख आते ही थम गया। पूज्य गुरुदेव ने उसी समय सभी को यथोचित समाधान देकर मंगलपाठ सुनाकर वहाँ से विदा किया।

जिस आवेश एवं रोष को मन स्थिति में वह प्रतिनिधि मंडल गुरुदेव के चरणों में पहुँचा था उसे देखकर वहाँ उपस्थित चतुर्विध संघ काफी चिंतित और आशंकित था कि आज अवश्य ही यहाँ पर कोई न कोई बवाल, बखेड़ा मचेगा। परन्तु उस राजयोगी महापुरुष का पुण्य प्रभाव तथा शांत प्रसन्नवदन का प्रभाव इतना गहरा हुआ कि सब कुछ सहज शान्ति से निपट गया। जैसे कुछ विशेष हुआ ही नहीं। यह बात औरों के लिए अपने आप में एक आश्चर्यजनक घटना थी। किंतु गुरुदेव के लिए यह बात सामान्य थी, सहज थी। उनहोंने अपनी साधना से औरों को नहीं, अपितु स्वयं को साधा था।

प्रत्येक अनुकूल प्रतिकूल स्थिति में स्थितप्रज्ञता, स्वस्थता, धैर्य, समाधि आदि गुण उन्हें सहज-साध्य थे। गुरु आनंद की यह समाधि सदैव समागत, सान्निध्य में उपस्थित चतुर्विध संघ के लिए प्रेरणा और आलंबन थी। बिना बोले, कहे, सुने बहुत कुछ भीतर में घटित हो जाता था। सैकड़ों नहीं, हजारों ऐसे गुरुभक्त थे, जो गुरुवर के दर्शन-चरणस्पर्श मात्र से ही परम तृप्ति का अनुभव करते, कृतकृत्य हो जाते। निरन्तर ज्ञान साधना में संलग्न गुरुवर प्रत्येक व्यक्ति के साथ अधिक बातचीत वार्तालाप नहीं कर पाते थे, किन्तु इसका कोई अफसोस दर्शनार्थी महसूस नहीं करता। उनकी एक झलक, एक अमी-नजर, एक मुस्कान ही अनेकों घंटों के वार्तालाप से भी न मिलने वाली अद्भुत आनंद की अनुभूति करा देती थी।

एक पंखा जो अच्छे (बांस) वंश से उत्पन्न होता है, वह स्वयं घूमकर दूसरों के ताप गर्मी को दूर करता है। महापुरुषों का जीवन भी उस पंखे के समान ही होता है। वे उत्तम वंश में उत्पन्न होते हैं और स्वयं अनेकों कष्ट सहकर भी दूसरों के संताप, कष्ट को दूर करने का ही कार्य करते हैं। पूज्य गुरुदेव ने भी कभी अपने सुख की परवाह नहीं की। बचपन से वृद्धावस्था तक गाँव-गाँव में पैदल घूम-घूम कर अनेकों कष्ट तथा परीषह सहन करके भी पर दुःख निवारण की साधना उन्होंने की। उसी साधना का यह परिपाक हुआ कि उनके समीप में, सान्निध्य में आने वाला स्वयंमेव शांत स्वस्थ बन जाता था।

पूज्य गुरुवर के जीवन की यह एक महत्वपूर्ण बात थी कि वे चाहे जैसी स्थिति परिस्थिति आये, कभी उत्तेजित नहीं होते थे जैसे चंदन के वृक्ष पर भयंकर विषधर, भुजंग (साप) लिपटे रहें, वह चंदनवृक्ष विषमय, जहरीला नहीं होता। वह अपनी शीतलता से च्युत नहीं होता (शीतलता को नहीं छोड़ता) वैसे ही संत-पुरुष प्रतिकूल परिस्थिति में भी अपने शांत स्वभाव को कभी नहीं छोड़ते और अपनी शीतलता से वे सभी को राहत पहुँचाते हैं। पूज्य गुरुवर भी उस चंदनवृक्ष की भांति हर स्थिति में शात रहकर औरों को शीतलता प्रदान करते थे। 'औरों को शीतल करे आपहुं शीतल होय' इस उक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति गुरु आनंद को शत्-शत् नमन।

भगवान महावीर स्वामी बाईक एम्बुलेंस सेवा का शुभारंभ

मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) : भगवान महावीर स्वामी पक्षी चिकित्सालय द्वारा मुजफ्फरनगर में घायल एवं असहाय पक्षियों की सेवा हेतु पक्षी बाइक एम्बुलेंस सेवा का शुभारंभ किया गया। इस सेवा का उद्घाटन श्रीमान कमलकिशोर जी देशभूषण कंडारकर जैन जी (आईएएस), मुख्य विकास अधिकारी, मुजफ्फरनगर द्वारा किया गया।

प्रेषक पुनीत जैन

दिल्ली में सुश्राविका श्रीमती नीलम जैन का संथारा गतिमान

दिल्ली : धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री प्रवीण जैन (दोघट वालो की संसारिक धर्मपत्नी) सुश्राविका श्रीमती नीलम जी जैन ने संथारा ग्रहण किया हुआ है। गौतम पुरी दिल्ली में उनका का संथारे का वीरवार को 15वाँ दिन पूर्ण हुआ। महासती पू. श्री सुप्रज्ञा श्री जी म. के पावन सान्निध्य में अन्न, जल का सम्पूर्ण त्याग है तथा चौविहार संथारा चल रहा है। जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र जी जैन, श्री संदीप जी जैन 'सोनू',श्री दीपक जी जैन, श्री नरेन्द्र जी जैन एवं श्री मुकेश जी सुराना जैन ने श्रीमती नीलम जैन जी के दर्शनों के लिए उनके घर पर जाकर उन्हें दर्शन वंदन करके भावना व्यक्त की।

प्रेषक : संदीप जैन 'सोनू'

अहमदनगर में आयोजित होगा गुरु आनंद का 34वाँ पुण्य स्मृति दिवस समारोह

अहमदनगर (महाराष्ट्र) : राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट् पू. गुरुदेव श्री आनंदऋषि जी म.सा. का 34वाँ पुण्य स्मृति समारोह हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 21 मार्च से 28 मार्च तक आनंदधाम पर मनाया जाएगा। उसके पूर्व भक्तिमय वातवरण तैयार करने हेतु 18 और 19 मार्च को जैन सोशल फेडरेशन की ओर से संगीत स्पर्धाओं का आयोजन बाल कलाकारों द्वारा किया जाएगा।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी इस अष्टदिवसीय समारोह में विविध आयोजन किए जाएंगे। 21 मार्च से अखंड नवकार महामंत्र जाप की शुरूआत आनंदधाम में होगी। प्रतिदिन सुबह आनंद व्याख्यानमाला के द्वारा संत सतीवृंद समाज को प्रतिबोधित करेंगे। आयंबिल, दया, एकासन, नीति आदि तपाराधनाओं के साथ यह समारोह सम्पन्न किया जाएगा। 21 मार्च को सुबह नवीपेठ जैन स्थानक शांतिमार्च का प्रारंभ होगा, जिसमें गुरु आनंद के भक्तगण पैदल भक्ति करते हुए आनंदधाम पहुंचेंगे। आनंदधाम चतुर्विध संघ की उपस्थिति में गुरु गुणानुवाद सभा होगी। सभा के पश्चात् व्यापारी मित्र मण्डल की ओर से गौतमप्रसादी का आयोजन होगा। वहीं सभी आठ दिनों तक जैन सोशल फेडरेशन द्वारा भगवान महावीर व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाएगा। आचार्यश्री जी स्मृति में अहमदनगर मर्चेंट्स को-ऑप. बैंक की ओर से भव्य रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया जाएगा। श्री तिलोक रत्न स्थानकवासी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ अहिल्यानगर एवं जैन सोशल फेडरेशन, अहिल्यानगर सभी गुरुभक्तों को इस भक्तिमय अष्टदिवसीय समारोह में आमंत्रित करता है। सभी आयोजनों में समय पर पहुँचकर अपनी श्रद्धा की समुनांजलि गुरुचरणों में समर्पित करें।

प्रेषक : सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन

सिकंदराबाद (तेलंगाना) : रामकोट स्थित गुरु गणेश भवन में विराजित साध्वी पू. श्री निर्मलाश्री जी म.सा. आदि ठाणा 5 के दर्शन, वंदन सिकंदाराबाद संघ के कार्याध्यक्ष श्री शांतिलाल जी बोहरा जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री सुरेन्द्र जी कटारिया जैन एवं वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय मंत्री श्री रतनचंदजी सिंघवी जैन आदि ने कर सुखसाता पूछी।

ईरान-अमेरिका-इजरायल युद्ध के हिंसक वातावरण में संयुक्त अरब अमीरात में मानवता की जैन व्यापारियों ने की मिसाल कायम

भारतीय अरबपति श्री योगेश जी दोशी जैन और श्री धीरज जी जैन ने ईरान युद्ध के बीच संयुक्त अरब अमीरात में फँसे हजारों भारतीयों की मदद की। दुबई में बिजनेस करने वाले श्री योगेश जी दोशी जैन ने अपने 64-यूनिट अपार्टमेंट कॉम्प्लेक्स को भारतियों के लिए खोल दिया, जिसमें खाने और रहने की सभी सुविधाएँ मुफ्त प्रदान की जा रही हैं। इस पहल के तहत 125 से अधिक भारतीय, जिनमें बच्चे वाले परिवार भी शामिल हैं, अस्थायी आश्रय प्राप्त कर रहे हैं।

इसी तरह, अजमान (संयुक्त अरब अमीरात) में रहने वाले श्री धीरज जी जैन ने अपने फॉर्म हाउस को अस्थायी शेल्टर में बदलकर 200 से ज्यादा फँसे भारतियों को मुफ्त रहने और भोजन की सुविधा दी। दोनों अरबपतियों ने इंडियन पीपल्स फोरम UAE और दुबई इंडियन कॉन्सुलेट जनरल के सहयोग से यह कदम उठाया। मदद पाने वाले भारतियों ने इस प्रयास को जीवन रक्षक बताया और कहा कि यह कठिन समय में उनके लिए बड़ी राहत साबित हुई।

योगेश दोशी जैन | धीरज जैन

यह घटना भारतीय जैन समुदाय और मानवता के प्रति इन अरबपतियों की दरियादिली का प्रतीक मानी जा रही है। हम, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से अपने जैन समाज का गौरव विश्व स्तर पर कायम करने के लिए दोनों जैन भाइयों का हार्दिक अभिनंदन करते हैं।

(पृष्ठ 3 का शेष)

जीव अनादिकाल एक मुख्य कारण है अज्ञानवश नये कर्मों का बन्ध से यात्रा करने पर भी मुक्त क्यों नहीं हुआ तो इसका रुका नहीं। धर्म की अनेक क्रियाएं की किन्तु बन्ध नहीं रुकने से जीव का जन्म-मरण का चक्रव्यूह चलता रहा। इस अंतिम भत्र में प्रभु महावीर ने सर्व प्रथम नवीन कर्मों के बन्ध को रोवाने के लिए दीक्षा ग्रहण की। सत्य की शोध के लिए एकान्त मौन व समत्व की साधना में करने के पश्चात् एकान्त व मौन की साधना के साथ संलग्त हो गये। उन्होंने अपने जीवन में संयम ग्रहण करने के पश्चात एकांत व मौन की साधना के साथ पूर्व परिचय का भी त्याग कर दिया। उन्होंने कभी अपने परिचय में यह नहीं बताया कि मैं वर्धमान हूँ या राजा सिद्धार्थ का पुत्र हूँ। अरपयसक होने पर वे इतना ही परिचय देते थे कि - 'मैं एक भिक्षु हूँ।'

सिद्धान्त व साधना : वे सदैव मौन रहकर अपनी आत्मा का ध्यान करते थे व परम आनंद का ध्यान कर रहते थे व परम आनंद में लीन रहते थे। उन्होंने उपसर्गो-परीषहों को सहजता से स्वीकार किया। वे देह व देह से जुड़े संसार को अपना नहीं मानते थे। वे उत्कृष्ट भेद विज्ञानी थे।

वे कर्म सिद्धांत को मानकर, अनेकांतवाद के सिद्धांत को मानकर, अनेकांतवाद के सिद्धांत को आत्मसात कर रहे थे। आने वाले उपसर्ग पर कभी निमित को दोष नहीं देते थे। वे जानते थे कि निमित्त निर्दोष है। भूतकाल में विभाव दशा में अपने को देह मानकर मैंने जो कर्म बान्धे हैं वे उदय में आए हैं, उन्हें क्षय किए बिना मुक्ति नहीं है। अतः सहज में जो उदय कर्म के अधीन उपसर्ग, परीषह आए उन्हें उन्होंने स्वभाव में रहकर स्वीकार किया और कर्म क्षय करते गए। जो कर्म सत्ता में थे, उनको उन्होंने बाह्य एवं आभ्यंतर तप, ध्यान व कायोत्सर्ग के द्वारा आमंत्रित कर क्षय कर दिया। (क्रमशः)

एकान्तर तप विधि और उसका दिव्य महत्व
एक दिवस भी भूखो रहनो, चलनो खांडा री धार

- डॉ. वरुण मुनि 'गुरु अमृत शिष्य'

जैन धर्म की आधारशिला ही 'तप' है। आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी तक का जो गौरवशाली इतिहास हम पढ़ते हैं, उससे यह स्पष्ट होता है कि यदि किसी भी आत्मा को कैवल्य ज्ञान (सर्वज्ञता) प्राप्त करना है या अपने संचित कर्मों का क्षय करना है, तो उसे तप की अग्नि में स्वयं को तपाना ही होगा। तप के बिना साधना का प्रारंभ संभव नहीं है। सिद्धि, लब्धि, ऐश्वर्य और सामर्थ्य का मूल आधार तप ही है।

जैन कथा साहित्य के अनुसार, प्राचीन काल में किसी भी कठिन कार्य को सिद्ध करने के लिए 'तेला तप' (तीन उपवास) की आराधना का विधान मिलता है। तप न केवल भौतिक सुख प्रदान करता है, बल्कि आत्मा को परम आनंद से सराबोर कर देता है। कहा भी गया है - "बिना तपे कार्य सिद्ध नहीं होता।"

तप के अद्भुत लाभ :

शारीरिक : शरीर के समस्त रोगों का नाश होता है और देह कंचन जैसी कांतिमान बनती है।

मानसिक : मन में शांति और विचारों में स्पष्टता आती है।

आध्यात्मिक : आत्मा पर लगे कर्म-पुद्गल (मैल) साफ होते हैं और जीवन शुद्ध से शुद्धतर हो जाता है।

जैन आगमों में तप के प्रकार :

जैन धर्म में तप की एक समृद्ध श्रृंखला है, जिसमें नवकारसी, पोरसी, एकाशन, बियासन, आयम्बिल, उपवास, बेला, तेला, अट्ठाई, मासखमण से लेकर अंतगढ़ सूत्र में वर्णित गुणरत्न संवत्सर, मुक्तावली और कनकावली जैसे कठिन तपों का वर्णन है। इन्हीं में एक अत्यंत महिमामयी तप है-वर्षीतप (एकान्तर तप), इसके रचयिता कौन है, पता नहीं, पर जिस भी मेधावी आचार्य की कल्पना है वे वंदनीय है।

वर्षीतप का ऐतिहासिक प्रसंग :

करोड़ों वर्ष पूर्व, अवसर्पिणी काल के तीसरे आरे में भगवान ऋषभदेव का जन्म हुआ। उस समय कल्पवृक्षों की शक्ति समाप्त होने पर जब मानवता संकट में थी, तब प्रभु ऋषभ ने 'असि, मसि और कृषि' का ज्ञान देकर समाज व्यवस्था का निर्माण किया।

एक बार किसानों को कृषि सिखाते समय, जब बैल अनाज खाने लगे, तो प्रभु ने करुणावश बैलों के मुख पर जाली (कपड़ा) बाँधने की सलाह दी ताकि वे चाबुक की मार से बच सकें। किंतु उन मूक प्राणियों को 360 पलोपल तक जो आहार की अंतराय (रुकावट) हुई, उसके कारण प्रभु को भी अंतराय कर्म का बंध हुआ।

परिणामस्वरूप, दीक्षा लेने के बाद भगवान को 400 दिनों तक निराहार रहना पड़ा। लोग मुनिचर्या की आहार विधि से अनभिज्ञ थे, इसलिए उन्हें रत्न, आभूषण या कन्याएं भेंट करते, पर निर्दोष आहार नहीं। अंततः हस्तिनापुर में राजकुमार श्रेयांस को 'जातिस्मरण ज्ञान' हुआ और उन्होंने अक्षय तृतीया के दिन प्रभु को इक्षु-रस (गन्ने का रस) का पारणा कराया। यहीं से आहार दान की महान परंपरा शुरू हुई।

तप की विधि और संकल्प :

भगवान आदिनाथ के इसी 400 दिनों के धैर्य और तप की स्मृति में आचार्यों ने 'वर्षीतप' का विधान किया। यह चैत्र कृष्णा अष्टमी से प्रारंभ होकर अगले वर्ष वैशाख शुक्ला तृतीया (अक्षय तृतीया) तक चलता है। इसमें एक दिन उपवास और एक दिन आहार (बेहतर हो यदि बियासन हो) का क्रम निरंतर चलता है। तप के दौरान ब्रह्मचर्य का पालन, सामायिक, प्रतिक्रमण, माला, स्वाध्याय आदि क्रिया करने से तप का प्रभाव और बढ़ जाता है।

आज का आधुनिक विज्ञान भी 'इंटरमिटेंट फास्टिंग' के रूप में इस तप की महत्ता को स्वीकार करता है। यह तन, मन और आत्मा को शुद्ध करने का अचूक मार्ग है। आइए, इस पावन दिवस पर हम भी अपनी शक्ति अनुसार तप का संकल्प लें। जो भी भव्य जीव इस तप को अंगीकार कर रहे हैं, उनकी तपस्या की अनंत - अनंत अनुमोदना!

पू. श्री शाश्वत मुनि जी म. को किया गया 'प्रवचन भास्कर' के पद से सम्मानित

सूरत (गुजरात) : अक्षर टाउनशीप सूरत में पहली बार होली चातुर्मास अध्यात्मिक रूप से सफल करने वाले, जिनके प्रवचन में ओज है, तेज हैं, एक नई क्रान्ति है। ऐसे युग प्रधान, आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. शिवमुनि जी म. के सुशिष्य पू. श्री शाश्वत मुनि जी म. को श्री-संघ के द्वारा 'प्रवचन भास्कर' के पद से सम्मानित किया गया।

कन्याकुमारी में अखिल भारतीय श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन स्वाध्यायी संघ का अधिवेशन

कन्याकुमारी (तमिलनाडु) : स्व. श्री दिनेश जी मुनोत, स्व. श्री भरतजी पटवा की स्मृति में कन्याकुमारी में श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन स्वाध्यायी संघ के राष्ट्रीय शिविर का उद्घाटन जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमीचंदजी चोपड़ा जैन, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री पारसजी छाजेड़ जैन, श्री अशोककुमार जी एन. पगारिया जैन, समाजसेवी श्री जवरीलाल जी कांकरिया जैन आदि की उपस्थिति में किया गया। कार्यकारिणी तथा अध्यक्ष श्री सतीशजी बनवट, सभी स्वाध्यायीगण, शिक्षकों की उपस्थिति मे शिविर का उद्घाटन संपन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य श्री आदर्शऋषिजी म.सा. के दिशा का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। स्वाध्याय शिविर का मुख्य लक्ष्य - स्वाध्याय की रुचि, आत्मचिंतन की आदत और सकारात्मक जीवनदृष्टी का विकास करना ही हमेशा शिविर का लक्ष्य रहेगा। प्रार्थना, प्रवचन तथा अध्ययन सत्रों द्वारा कर्म, धर्म, जीवन व्यवहार को समझ कर उन्हे दैनिक जीवन में उतारने की प्रेरणा यहाँ प्रदान की गई।

भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव अवकाश घोषित करने की मांग

भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव (जयंती) के पवित्र अवसर पर स्कूलों, कॉलेजों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में अवकाश घोषित करने की माँग को लेकर महाराष्ट्र राज्य के विद्यालय शिक्षा मंत्री माननीय श्री दादा दगडूजी भूसे साहब को एक ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। यह ज्ञापन श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस पंचम ज़ोन युवा शाखा के अध्यक्ष श्री देवेंद्र सुनीलजी पारख जैन की ओर से आत्म-ध्यान योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शशिकांतजी (पिंटू) कर्नावट जैन के मार्गदर्शन में प्रस्तुत किया गया। इस प्रस्ताव का उद्देश्य भगवान महावीर स्वामी द्वारा दिए गए अहिंसा, सत्य, करुणा और नैतिकता के सार्वभौमिक और प्रेरणादायक संदेश को विद्यार्थियों और समाज तक व्यापक रूप से पहुँचाना और उनकी जयंती के महत्व को उजागर करना है।

इस संबंध में, माननीय मंत्री जी ने सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और इस मुद्दे पर सकारात्मक रूप से विचार करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारस जी बेदमुथा जैन, पंचम ज़ोन के युवा कार्यकारिणी सदस्य श्री तुषारजी कोठारी जैन और जैन समुदाय के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

राष्ट्रसंत पू. श्री कमलमुनि म.सा. 'कमलेश' को वर्ल्ड पीस काउंसिल द्वारा सम्मान

अहिंसा, करुणा, जीवदया और मानव सेवा की साधना में निरंतर सेवा एवं योगदान प्रदान कर रहे राष्ट्रसंत गुरुदेव पू. श्री कमलमुनि जी म.सा. 'कमलेश' को World Peace Council द्वारा सम्मानित किया जाना संपूर्ण जैन समाज के लिए अत्यंत गौरव, प्रेरणा और आध्यात्मिक हर्ष का विषय है। गुरुदेव के जीवन का प्रत्येक क्षण मानवता की सेवा, 36 प्रकार के कल्याणकारी कार्यों, जीवों के प्रति करुणा, सामाजिक जागरण और आध्यात्मिक चेतना के प्रसार को समर्पित रहा है। यह सम्मान केवल एक महान संत के व्यक्तित्व का अभिनंदन नहीं, बल्कि उन दिव्य मूल्यों का वंदन है जिन्हें गुरुदेव अपने तप, त्याग और वाणी के माध्यम से समाज में प्रतिष्ठित कर रहे हैं।

मिरी में कु. चैताली बोकडिया जैन की भागवती दीक्षा महोत्सव सम्पन्न

मिरी (महाराष्ट्र) : आचार्य भगवंत पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा. की पावन दीक्षा भूमि एवं प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म.सा. की जन्म एवं दीक्षा भूमि पर उपाध्याय भगवंत पू. श्री प्रवीणऋषि जी म.सा. आदि ठाणा एवं 20 से अधिक साध्वी समूह की उपस्थिति में कु. चैताली बोकडिया की जैन भागवती दीक्षा महोत्सव संयम का आनंदोत्सव हजारों भाई-बहनों की उपस्थिति में मिरी जैसे ग्रामीण एवं छोटे गाँव में जिस उत्साह और उमंग के साथ संपन्न हुआ इसका इतिहास तो बना ही पर समाज के सामने नये आदर्शों की रचना का भी निर्माण हुआ। मिरी संघ एवं संपूर्ण संयम महोत्सव के लाभार्थी श्रीमान रमणलालजी लुंकड जैन परिवार ने सूक्ष्म आयोजन नियोजन से एक नया इतिहास जैन समाज के इतिहास में अंकित किया।

जैन प्रकाश के पाठक की समीक्षा...

समाचारों, लेखों व अन्य सामग्री से,
जिनशासन की सेवा करते हुए,
फैला रहा है अनुपम ज्ञान-प्रकाश।
अखबारों में अखबार अनूठा,
'संजीव' है प्यारा अखबार जैन प्रकाश।

- संजीव जैन, करनाल (हरियाणा)

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

फलीचड़ा (राजस्थान) : श्रीमान् लोकेश जी धाकड़ जैन एवं श्रीमान् मनीष जी धाकड़ जैन के पिताश्री तथा जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नेमीचंद जी धाकड़ जैन के भ्राता सुश्रावक श्री महावीर कुमार जी धाकड़ जैन का 06 मार्च 2026 को देवलोकगमन हो गया। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

तीर्थंकर ऋषभदेव जन्म कल्याणक पर विशेष...

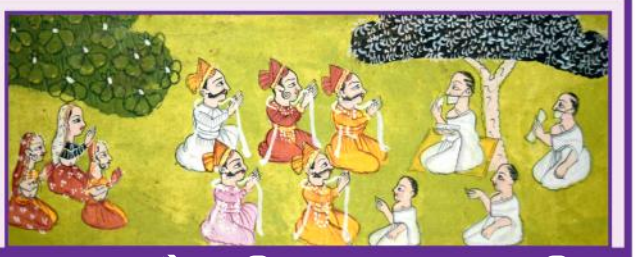

मानव समाज में सभ्यता और जीवन-व्यवस्था की आधारभूत विधाओं के प्रवर्तक-भगवान आदिनाथ

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

ऋषभदेव जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर माने जाते हैं और भारतीय धार्मिक-सांस्कृतिक परंपरा में उन्हें आद्य धर्म प्रवर्तक के रूप में विशेष स्थान प्राप्त है। जैन आगम कल्पसूत्र में वर्णित है कि उनका जन्म अयोध्या में इक्ष्वाकु वंश के राजा नाभिराज और रानी मरुदेवी के यहाँ हुआ था।

आदिनाथ को मानव समाज में सभ्यता और जीवन-व्यवस्था की आधारभूत विधाओं के प्रवर्तक के रूप में भी स्मरण किया जाता है। जैन परंपरा के अनुसार उन्होंने मानव समाज को कृषि, पशु पालन, लिपि, गणना, व्यापार तथा विविध शिल्प-कौशलों का ज्ञान प्रदान किया, जिससे आदिम जीवन-पद्धति से संगठित सामाजिक - आर्थिक व्यवस्था की ओर विकास संभव हुआ। इस दृष्टि से भगवान आदिनाथ केवल धार्मिक व्यक्तित्व ही नहीं, बल्कि प्राचीन भारतीय संस्कृति के सांस्कृतिक नायक और सभ्यता के प्रतीक भी माने जाते हैं।

पुरातात्त्विक और कला-ऐतिहासिक साक्ष्यों में भी भगवान आदिनाथ की प्रतिष्ठा अत्यंत प्राचीन दिखाई देती है। जैन प्रतिमा-कला में उन्हें प्रायः कायोत्सर्ग या पद्मासन मुद्रा में दर्शाया जाता है, जिनका लक्षण (लाञ्छन) वृषभ (बैल) है। मथुरा, उत्तर भारत तथा पश्चिमी भारत के अनेक जैन तीर्थों से प्राप्त प्रतिमाएँ और शिलालेख यह संकेत करते हैं कि प्रारम्भिक शताब्दियों से ही आदिनाथ की पूजा व्यापक रूप से प्रचलित थी। मध्यकालीन जैन मंदिरों और पांडुलिपि-चित्रों में भी उनकी समृद्ध आइकनोग्राफी विकसित हुई, जो जैन धर्म के दार्शनिक आदर्श-अहिंसा, तप और वैराग्य का प्रतीक है। इस प्रकार धार्मिक साहित्य, पुरातात्त्विक अवशेषों और कला-परंपरा के समन्वित अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भगवान आदिनाथ का व्यक्तित्व भारतीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

नाशिक में भव्य 108 आयंबिल तप महोत्सव सम्पन्न

नाशिक (महाराष्ट्र) : श्रुताचार्या साध्वी पू. डॉ. मुक्तिप्रभाजी म.सा. के एवं अरिहंत प्रिया साध्वी पू. डॉ. दिव्यप्रभाजी म. सा. के दशम स्मृतिदिन तथा संथारा साधिका वात्सल्यमूर्ति दर्शन प्रभाजी म. सा. के प्रथम मासिक स्मरण के अवसर पर आयोजित 108 आयंबिल तप महोत्सव अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

यह कार्यक्रम श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के चतुर्थ जोन, महाराष्ट्र प्रांत के तत्वावधान में आयोजित किया गया। देवलाली स्थित श्री लोगस्स सूत्र आराधना केंद्र में यह महोत्सव भव्य वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस आयंबिल तप साधना में पूज्य डॉ. अनुपमाजी म.सा., पू. श्री योगसाधनाजी म.सा., पू. श्री उत्तमसाधनाजी म.सा., पू. श्री अपूर्वसाधनाजी म.सा., पू. श्री विरतीसाधनाजी म.सा., पू. श्री श्रुतसाधनाजी म.सा., पू. श्री विश्वाससाधनाजी म.सा., पू. श्री स्वरूपसाधनाजी म.सा., पू. श्री सफलदर्शनाजी म.सा. सहित साध्वीवृंद ने तप साधना कर आध्यात्मिक अनुशासन का प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया।

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

NAMO eWaste
Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

अहिल्यानगर में नारी शक्ति सम्मान कार्यक्रम संपन्न

अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) : राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषिजी म. सा. की कर्मभूमि आनंदधाम, अहिल्यानगर में 8 मार्च महिला दिवस के अवसर पर स्वस्थ नारी, स्वस्थ समाज विषय पर आयुर्वेदाचार्य डॉ अंशु मुळे का मार्गदर्शन तथा नारी शक्ति सम्मान पुरस्कार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषिजी म.सा. के सुशिष्य संस्कार दिवाकर पू. श्री आलोकऋषिजी म.सा. द्वारा मंगलाचरण एवं महान तपसाधिका पू. श्री विनितदर्शनाजी म.सा. द्वारा शुभकामना से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज के लिए स्वस्थ नारी का महत्व डॉ. अंशु मुळे ने प्रस्तुत किया। तन के साथ मन के स्वास्थ्य के महत्वपूर्ण सुझाव बताये। कैन्सर जैसे दुर्लभ बीमारी पर मात करके अन्नपूर्णा बनने वाले लता विनोदजी गांधी ने झुंजार स्वयंसिद्धा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। तलाठी, समाज कल्याण अधिकारी चैताली जितेन्द्रजी कटारिया, GST असिस्टेंट कमिश्नर नीलम महावीरचंदजी लुनावत ने नारी शक्ति पुरस्कार प्रदान किया गया।

चेन्नई में नारी शक्ति और सेवा के सम्मान में आयोजित हुआ सेवा शक्ति संध्या कार्यक्रम

चेन्नई (तमिलनाडु) : विश्व अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के शुभ अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की तमिलनाडु महिला द्वारा द्वारा शहर के अरुंबाक्कम स्थित डी.जी. वैष्णव कॉलेज में विशाल जन उपस्थिति के साथ सेवा शक्ति संध्या कार्यक्रम का शानदार आयोजन किया गया। इस अवसर पर जानी-मानी समाजसेविका और सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में अग्रणी रूप से प्रसिद्ध श्रीमती कांताजी चोरड़िया जैन ने इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए। इस अनूठे कार्यक्रम में महिला दिवस के मौके पर समाज में महिला के सम्मान और उनके उत्थान के लिए निस्वार्थ और अनवरत रूप से अपना जीवन लगा देने वाली महिलाओं को सम्मानित कर उनके प्रति आभार प्रकट किया गया। इसी के साथ इस कार्यक्रम में सहृदयी दानदाताओं के सहयोग से निचले तबके की कई गरीब महिलाओं को स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें विभिन्न प्रकार के ऐसे उपकरण और मशीनें प्रदान की गई जिनके द्वारा वे महिलाएं अर्थ उपार्जन कर अपने परिवार का भरण पोषण कर सके तथा समाज में सम्मान से जीने का हक प्राप्त कर सके।

जगराओं में श्री रूपचंद जी म. का 188वाँ दीक्षा महोत्सव

जगराओं (पंजाब) : स्वामी पू. श्री रूपचन्द जी महाराज का वार्षिक 188वाँ दीक्षा सांस्कृतिक कार्यक्रम आचार्य सम्राट् पू. गुरुदेव श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा. की सुशिष्या महासाध्वी सेवारत्ना पू. श्री प्रियदर्शना जी म.सा. आदि ठाणा, संयम की अपूर्व आराधिका महासाध्वी पू. श्री राजेश्वरी जी म.सा की सुशिष्या, कर्मठ योगिनी, प्रवचन प्रभाविका महासाध्वी पू. श्री सुनीता जी म.सा. एवं तप चक्रचूड़ामणि, तप सिद्धेश्वरी, तपाचार्य महासाध्वी पू. श्री शुभ जी म.सा. आदि ठाणा जिनशासन मुक्तामणि, उप-प्रवर्तिनी पू. महसाध्वी पू. श्री कैलाशवती जी म.सा. की सुशिष्या, तप प्रेरिका परम विदुषी महासाध्वी पू. श्री सुव्रतप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में प्रसिद्ध राष्ट्र कवियित्री एवं संगीत गायिका डॉ. अनामिका जी जैन 'अम्बर' की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय महिला महामंत्री श्रीमती रीचा संदीप जी जैन भी विशेष रूप से शामिल हुई और महासती पू. श्री सुनीता जी महाराज आदि ठाणे के दर्शनों का और प्रवचन श्रवण करने का लाभ लिया।

इस अवसर पर पंजाब प्रदेश के गवर्नर माननीय श्री गुलाबचन्द जी कटारिया और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनीता जी कटारिया ने पूज्य संत-सतीवृंद के दर्शन का लाभ लिया। उन्होंने जैन तप त्याग और संयम पर अपने बहुत अच्छे विचार रखें और जैन समाज का धन्यवाद किया। मंच का संचालन श्री धर्मपाल जी जैन श्री रूपचंद एस.एस. जैन बिरादरी रजि. जगराओं के द्वारा किया गया। भोजन वितरण आचार्य श्री आत्माराम जैन सेवा संघ, लुधियाना द्वारा किया गया। इस मौके पर लक्की कूपन स्वामी श्री रूपचंद जी महाराज के 21 लक्की ड्रा द्वारा निकाले गए।

जरूरतमंद विद्यार्थियों को कॉपी वितरण कार्यक्रम आयोजित

जामखेड (महाराष्ट्र) : जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्थ ज़ोन और कोठारी प्रतिष्ठान, समर्थ हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में होनहार और जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए कॉपी के वितरण का कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस पहल के अंतर्गत जामखेड क्षेत्र के 249 विद्यार्थियों को प्रत्येक को दो क्वायर बुक भेंट की गई। कार्यक्रम के अध्यक्षता जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आनंद भंडारी ने की।

आचार्य आनंदऋषिजी शिक्षण प्रसारक मंडल ने महिला टीचरों को सम्मानित किया

नाशिक (महाराष्ट्र) : इंटरनेशनल महिला दिवस के मौके पर, राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म.सा. शिक्षण प्रसारक मंडल द्वारा आयोजित एक खास सम्मान समारोह में चीफ गेस्ट के तौर पर बोल रही थीं। इस मौके पर, नामको बैंक की डायरेक्टर श्रीमती सपनाजी बाघमार मंच पर मौजूद थीं। इस प्रोग्राम में, इंस्टीट्यूशन की इंग्लिश और मराठी दोनों मीडियम की सभी महिला टीचरों और नॉन-टीचिंग स्टॉफ को उनके शानदार काम के लिए सम्मानित किया गया।

उनके गाइडेंस में, जैन कॉन्फ्रेंस की महिला उपाध्यक्षा श्रीमती कल्पनाजी धाड़ीवाल जैन ने आगे कहा कि जब महिलाएं खुद आगे बढ़ रही हैं, तो उन्हें दूसरी महिलाओं के साथ भी सम्मान से पेश आना चाहिए और उन्हें सशक्त बनाना चाहिए।

इस शुभ समारोह में संस्था के प्रेसिडेंट सुनीलजी चोपड़ा, सेक्रेटरी प्रकाशजी कोठारी, जॉइंट सेक्रेटरी मणिलालजी कुमट, डायरेक्टर लालाभाऊजी जैन, डायरेक्टर भीकचंदजी धाड़ीवाल, डायरेक्टर महेंद्रजी धाड़ीवाल, एक्सपर्ट डायरेक्टर अशोकजी शाह और सभी टीचिंग स्टाफ और नॉन-टीचिंग स्टाफ मौजूद थे।

आस्था जैन ने UPSC परीक्षा में 9वीं रैंक प्राप्त की

शामली (उत्तर प्रदेश) : जनपद शामली के कस्बा कांधला में संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) परीक्षा में देशभर में 9वाँ स्थान प्राप्त करने वाली होनहार बेटी सुश्री आस्था जैन ने शानदार उपलब्धि न केवल उनके परिवार बल्कि पूरे शामली जनपद और प्रदेश के लिए गर्व और प्रेरणा का विषय है। उनकी यह सफलता क्षेत्र की बेटियों और युवाओं के लिए एक नई प्रेरणा बनकर उभरी है। शासन प्रभु से कामना है कि आस्था जैन अपने ज्ञान, परिश्रम और समर्पण से देश सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दें तथा निरंतर नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करें।

जैन समाज की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाली याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने किया खारिज

नई दिल्ली : सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एक वकील द्वारा दायर पाँच 'फ्रिवोलस' (निराधार) जनहित याचिकाओं (PIL) को खारिज कर दिया। इन याचिकाओं में से एक याचिका में प्याज और लहसुन में 'तामसिक' (नकारात्मक) ऊर्जा होने की वैज्ञानिक जाँच कराने की माँग की थी। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांतजी ने वकील सचिन गुप्ताजी को फटकार लगाते हुए पूछा, आधी रात को ये सब याचिकाएं ड्राफ्ट करते हो क्या?' चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जयमलया बागची की पीठ ने वकील को फटकार लगाई और कहा कि ये याचिकाएं 'अस्पष्ट, फ्रिवोलस और निराधार' हैं। पीठ ने कहा कि गुप्ताजी ने एक के बाद एक ऐसी याचिकाएं दायर की हैं, जिनमें कोई ठोस कानूनी आधार नहीं है।

याचिकाकर्ता ने अपनी प्याज-लहसुन वाली याचिका में जैन समुदाय की आहार परंपराओं का हवाला दिया गया था, जहाँ जैन लोग प्याज, लहसुन और जड़ वाली सब्जियों को 'तामसिक' मानकर परहेज करते हैं। याचिका में माँग की गई थी कि एक समिति बनाई जाए जो जाँच करें कि प्याज और लहसुन में क्या 'तामसिक' या नकारात्मक सामग्री है। इस पर सुनवाई के दौरान चीफ जस्टिस ने वकील से पूछा, 'आप जैन समुदाय की भावनाओं को ठेस क्यों पहुंचाना चाहते हैं?' सचिन ने जवाब दिया कि ये एक सामान्य मुद्दा है और गुजरात में कथित तौर पर प्याज के इस्तेमाल को लेकर एक तलाक का मामला सामने आया था।

J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन

चेयरमैन

अभय जैन

महामंत्री

अतुल जैन

कोषाध्यक्ष

अमित जैन

- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9650485980 Email.: foundationjpjain@gmail.com

नारी सम्मान से ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण

जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा दिल्ली द्वारा भव्य कार्यक्रम

नई दिल्ली : अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर रविवार, दिनांक 8 मार्च 2026 को प्रातः 10:00 बजे श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की प्रान्तीय महिला शाखा, दिल्ली के तत्वावधान में "नारी सम्मान से ही राष्ट्र निर्माण" विषय पर एक गरिमामय एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम का आयोजन जैन भवन, गोल मार्केट, नई दिल्ली के सांस्कृतिक हॉल में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम का आयोजन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान अतुल जी जैन की प्रेरणा तथा राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जी जैन के मार्गदर्शन में किया गया।

समारोह में विशेष रूप से IAS, IRS, JUDGES & DOCTORS का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली पुलिस के एडिशनल कमिश्नर (स्पेशल सेल) श्री रजनीश गुप्ता जी उपस्थित रहे। जिन्होंने अपने संबोधन में कहा कि समाज में नारी का सम्मान और सशक्तिकरण ही राष्ट्र की प्रगति का वास्तविक आधार है। कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित महिलाओं ने अपनी उपस्थिति से आयोजन को गौरवान्वित किया। इनमें श्रीमती मनीषा जी जैन-उप निदेशक आयकर विभाग वैशाली, गाजियाबाद, श्रीमती रेणुका जी गुप्ता-मुख्य आयकर आयुक्त देहरादून एवं गाजियाबाद, श्रीमती शोभा बिजेन्द्र जी गुप्ता संस्थापक-सम्पूर्णा एनजीओ दिल्ली, डॉ. पूजा जी जैन CEO नोबेनियो डीसीएच अस्पताल कंझावला रोड़, बुध विहार-दिल्ली, श्रीमती प्रांशु जी जैन-न्यायिक मजिस्ट्रेट सिविल जज गुरुग्राम, श्रीमती निकिता नरेश जी जैन फाउण्डर वर्धमान रिसाइक्लिंग प्राइवेट लिमिटेड़, श्रीमती नीतू जी सिंघल डायरेक्टर-नवदृष्टि ग्रुप दिल्ली जैसी विशिष्ट हस्तियों की सहभागिता उल्लेखनीय रही।

समारोह की अध्यक्षता श्रीमती चन्द्रकलीजी जैन राष्ट्रीय वरिष्ठ मार्गदर्शिका जैन कॉन्फ्रेंस, महिला शाखा नई दिल्ली धर्मपत्नी श्री महावीर प्रसाद जी जैन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली ने की। इस अवसर पर राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष सुरेश जी जैन ने महिलाओं को सम्बोधित कर उनके कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक किया।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में दिल्ली प्रान्तीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सीमा जी जैन, दिल्ली प्रान्तीय महिला महामंत्री श्रीमती कनिका जी जैन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों, सम्मानित व्यक्तियों तथा उपस्थित जनसमूह के लिए स्नेहपूर्ण सामूहिक भोजन की भी व्यवस्था की गई।

इन्दौर हाईकोर्ट में भोजशाला 'धार' पर जैन पक्ष के दावे से संबंधित जनहित याचिका स्वीकृत

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : भोजशाला धार पर जैन पक्ष के दावे से सम्बन्धित पी. आई.एल. (जनहित याचिका) इन्दौर हाईकोर्ट खंडपीठ में रजिस्टर्ड किया गया है। जिस पर शीघ्र ही सुनवाई की आशा है। ज्ञातव्य है कि यह जैन धरोहर है और यह जैनाचार्य मानतुंग मुनि से सम्बन्धित है। यह वही जैनाचार्य मानतुंग मुनि हैं जिनके तप त्याग की महिमा से राजा भोज भी इतना प्रभावित हुए थे कि उसने समस्त मालवा प्रांत में जैन धर्म का विस्तृत प्रचार-प्रसार किया था। जैन समाज में भक्तामर स्तोत्र द्वारा आदिनाथ भगवान की स्तुति की जाती है। स्मरणीय है कि बहुसंख्यक समाज और एक विशेष समाज आपस में भोजशाला धार को अपनी अपनी बताकर मुकदमाबाजी कर रहे हैं।

प्रेषक : सलेक चन्द जैन

जैन गौरव

श्रेणिक बिम्बसार

भगवान महावीर के अनन्य भक्तों और उनके धर्म तीर्थ के प्रभावकों में मगध नरेश श्रेणिक बिम्बसार का स्थान सर्वोपरि है। भगवान का जन्म, समवसरण और मोक्ष की भूमि राजा श्रेणिक के मगध राज के अर्न्तगत ही मानी जाती है। भगवान महावीर और उनके तीर्थंकरत्व की इतनी निकटता एवं घनिष्ठता का प्रधान कारण अवश्य ही मगधाधिपति महाराज श्रेणिक और उनके प्रायः सम्पूर्ण परिवार को भगवान के प्रति अनन्य भक्ति, श्रद्धा और प्रेम थे। भाई चिलातिपुत्र ने राज्य काल से विरक्त हो दत्त नामक जैन मुनि से दीक्षा ले ली। परिणाम स्वरूप श्रेणिक को राज्य करने का अवसर मिला। श्रेणिक ने राजधानी का पुनः निर्माण किया, शासन की सुव्यवस्था की, अपनी राज्य शक्ति को संगठित किया और उसका सर्वतोमुखी विकास एवं विस्तार करने में जुट गये। इन कार्यों में अपने चतुर मित्र अभय कुमार से बड़ी सहायता मिली। उसने चेटक की पुत्री चेलना और कोसल की राजकुमारी कोशल देवी (प्रसेनजित् की बहन) के साथ विवाह किया। उन दोनों शक्तिशाली पड़ोसी राज्यों के स्थायी मैत्री के सूत्र में बाँध लिया। चेटक सुता चेलना उसकी पट्टमहिपी रही। वह कुशल शासक तो था ही। उसके राज्य में न किसी प्रकार की अनीति थी और न किसी प्रकार का भय था। वह दयाशील एवं मर्यादाशील था। साथ ही बड़ा दानवीर और निर्माता भी था। राजधानी के पुनःनिर्माण एवं सर्वप्रकार सुन्दर बनाने के अतिरिक्त उसने सिद्धांचल-सम्मेदशिखर पर जैन निषिधकाएँ तथा अन्यत्र अनेक जिनायतन, स्तूप, चैत्यादि भी निर्माण करायें। श्रेणिक जैन धर्म और भगवान महावीर का अनन्य भक्त था। चेलना स्वयं महावीर की मौसी (या ममेरी बहन) थी। वह अत्यन्त पति-परायणा, विदुषी और धर्मात्मा थी। तीर्थंकर महावीर का प्रथम समवसरण में महाराज श्रेणिक सपरिवार उपस्थित हुये थे। श्रेणिक ने गौतम गणधर के माध्यम से भगवान से एक-एक कर साठ हजार प्रश्न किये थे, और उन्होंने उन सबका समाधान किया था। उक्त प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर ही विपुल जैन साहित्य की रचना हुई।

सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य

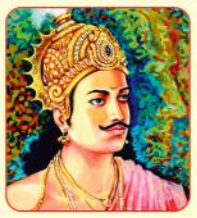

आधुनिक दृष्टि से भारतवर्ष के शुद्ध व्यवस्थित राजनीतिक इतिहास का जो प्राचीन युग हैं, उसके प्रकाशमान नक्षत्रों में प्रायः सर्वाधिक तेजपूर्ण नाम चन्द्रगुप्त का है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में चन्द्रगुप्त ने शक्तिशाली नन्दवंश का उच्छेद करके उसके स्थान में मौर्य वंश की स्थापना की थी। उसके प्रधान नायक ये ही गुरु-शिष्य अर्थात चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य थे। एक जैन राजा यदि राजनीति विद्या-विचक्षण एवं नीतिविशारद पण्डित था, तो दूसरा परम पराक्रमी एवं तेजस्वी क्षत्रिय वीर था। व्यक्तिगत आस्था की दृष्टि से जैन धर्म के प्रबुद्ध अनुयायी है। युवराज सिद्धपत्र हिरण्यगुप्त धनानन्द चाणक्य से रूष्ट हो गया, उसने उसका अपमान किया। कोई कहते हैं कि चाणक्य का अपमान महाराज नंद और युवराज की उपस्थिति में दानशाला की परिचारिका द्वारा प्रथम भेंट के अवसर पर ही किया गया था। जो हो अपमान से क्षुब्ध और कुपित चाणक्य ने भरी सभा में यह प्रतिज्ञा की कि जिस प्रकार उग्रवायु का प्रचण्ड वेग अनेक शाखा समूह सहित विशाल एवं उत्तुंग वृक्षों को जड़ से उखाड़ फेंकता है, चन्द्रगुप्त के जन्म व वंश की अनेक कहानियाँ प्रचलित है, मौर्य शब्द, मौर्य वंश भी कई कहानियों में गुथा हुआ था। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को प्राप्त कर लिया, कई वर्षों तक चन्द्रगुप्त को विविध अस्त्र-शस्त्रों के संचालन, युद्धविद्या, राजनीति तथा अन्य उपयोगी ज्ञान-विज्ञान एवं शास्त्रों की समुचित शिक्षा दी।

धीरे-धीरे उसके लिये धन व बहुत से युवा साथी भी जुटा दिये। ई. पूर्व 326 में भारत भूमि पर जब यूनानी सम्राट सिकन्दर महान ने आक्रमण किया तो उससे स्वदेश भक्त चाणक्य का हृदय बहुत दुखी हुआ, उसने शिष्य चन्द्रगुप्त को सलाह दी कि वह यूनानियों की सैनिक पद्धति, सैन्य-संचालन और युद्ध कोष का उनके बीच रहकर कुछ में प्रत्यक्ष अनुभव करें। कुछ समय पश्चात पंजाब के यूनानी सत्ता के एक भूभाग के विरूद्ध विद्रोह का नेतृत्व कर उसे स्वतंत्र कर लिया। एक छोटा सा स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में वह सफल हो गया। चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने नन्द साम्राज्य को सीमावर्ती प्रदेशों पर अधिकार कर प्रारंभ किया। एक के पश्चात् एक ग्राम, नगर दुर्ग और गढ़ छल-बल-कौशल से जैसे भी बनाये हस्तगत करते चले विजित प्रदेशों एवं स्थानों को सुसंगठित एवं व्यवस्थित करते हुये तथा अपनी शक्ति में उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुये अन्ततः वे राजधानी पाटलिपुत्र तक पहुँच गये। चन्द्रगुप्त के पराक्रम, रणकौशल एवं सैन्य संचालन, पटुता, चाणक्य की कूटनीति एवं सदैव सजग रहकर आगे बढ़ते गये, एक-एक कर नन्द कुमार लडते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हुये। अन्ततः वृहद महाराज पदमानन्द ने हताश होकर समर्पण कर दिया। नन्दराज की सुपुत्री सुप्रभा से चन्द्रगुप्त का विवाह हुआ। वीर चन्द्रगुप्त राजधानी में सुप्रभा को पटरानी बनाकर मगध के राज्य सिंहासन पर आसीन हुआ। राज्य विस्तार होता गया, उज्जयिनी को भी अपनी उपराजधानी बनाया। दक्षिण भारत विजय का अभियान भी पूर्ण हुआ। मध्य एशिया के महाशक्तिशाली यूनानी सम्राट सेल्यूकस ने ई. पूर्व 305 में भारतवर्ष पर भारी आक्रमण किया, चन्द्रगुप्त ने योजनापूर्वक उन्हें पराजित किया, उनकी पुत्री हेलन के विवाह प्रस्ताव को स्वीकार किया। कोटिल्य के अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण भारत वर्ष के रूप में चक्रवर्ती क्षेत्र की जो परिभाषा है वही समुद्र पर्यन्त, आसेतु हिमाचल भूखण्ड इस मौर्य सम्राट के अधीन था। त्रिरत्न, चैत्यवृक्ष, दीक्षावृत आदि की छवि के सिक्के मौर्य सम्राट ने निकाले थे। चन्द्रगुप्त को उन मुकुटबद्ध माण्डलिक सम्राटों में अन्तिम कहा गया है। जिन्होंने दीक्षा लेकर अन्तिम जीवन जैन मुनि के रूप में व्यतीत किया था। वह भद्रबाहु श्रुतकेवली की आम्नाय का उपासक था। श्रवणबेलगोल पहुँचा जहाँ आचार्य भद्रबाहु दिवंगत हुये थे। उस स्थान के एक पर्वत पर मुनिराज चन्द्रगुप्त ने तपस्या की, उसके पश्चात् संलेखना पूर्वक देह त्याग किया। उनकी स्मृति में वह पर्वत चन्द्रगिरि नाम से प्रसिद्ध है। चाणक्य भी पर्याप्त वृद्ध हो चुके थे और राजकार्य से विरत होकर आत्म कल्याण के इच्छुक थे। मुनि दीक्षा लेकर दुर्धर तपस्या और घोर उपसर्ग सहते हुये संलेखनापूर्वक देह त्याग किया। प्राचीन कई शिलालेखों पर अंकित यह इतिहास है। आचार्य जैन मन्त्रीश्वर चाणक्य और उनके सुशिष्य जैन सम्राट चन्दगुप्त मौर्य की अद्वितीय जोड़ी जैन इतिहास की ही नहीं, सम्पूर्ण भारतीय इतिहास की अमर उपलब्धि है।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001. सम्पर्क : 90197 31906 ❊ अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।